

सैकड़ों रोगों की एक दवा – शिवाम्बु



Dr. C.M. Chordia
Consultant for Various
Effective Drugless Self
Curing Therapies for
Treatment of Chronic &
Acute Diseases

आज वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिवाम्बु शरीर से गुर्दा द्वारा रक्त को शुद्धिकरण से प्राप्त जीवनोपयोगी जल का वह भाग है, जिसमें शरीर के लिए उपयोगी सैकड़ों ऐसे तत्व होते हैं, जिनका शरीर तत्काल उपयोग नहीं कर पाता और उनको संचय करने तथा रखने के लिए शरीर में अलग व्यवस्था नहीं होने से उसको विसर्जित करना पड़ता है। ऐसे उपयोगी तत्व जो आवश्यकता से ज्यादा होते हैं, शिवाम्बु के माध्यम से शरीर के बाहर आते हैं। जैसे अब कभी हमारे पास पैसे अधिक होते हैं, तत्काल जिनकी आवश्यकता न हो, तो हम उस धन को बैंक अथवा अन्य किसी के पास जमा करवा देते हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर हम उन्हें पुनः प्राप्त कर सकें। उसी प्रकार शिवाम्बु गंदा, खराब, विषैला, हानिकारक, विजातीय तत्व नहीं है, अपितु स्वास्थ्यवर्धक, जीवनोपयोगी शरीर द्वारा निर्मित रासायनिक प्रयोगों द्वारा बना जल है। शिवाम्बु में सैकड़ों उपयोगी खनिज, रसायन, हारमोन्स, एन्जाइम्स, विटामिन, क्षार, पोषक तत्व, विष नाशक पदार्थ तथा रोग निवारक, पीड़ा को शान्त करने वाले, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता और ताकत बढ़ाने वाले तत्व होते हैं, जो निष्क्रिय अंगों को सक्रिय बनाने, रक्त के शुद्धिकरण, पाचन एवं श्वसन तंत्र जैसे-विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को सुव्यवस्थित, नियन्त्रित और संतुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिवाम्बु में उपकारक तथा रोग प्रतिकारक ऐसे निर्दोष रासायनिक तत्व मिले हैं, जो रोगी और निरोगी दोनों के लिये उपादेय होते हैं। फलस्वरूप विश्व के आधुनिक दवा निर्माताओं ने शिवाम्बु से प्राप्त जीवनोपयोगी आवश्यक तत्वों तथा अन्य भौतिक तत्वों के योग से कैंसर, एड्स, टी.बी., हृदय रोग, दमा, नपुंसकता, गुर्दा आदि के असाध्य रोगों के उपचार हेतु बहुमूल्य प्राणदायिनी दवाइयों और इंजेक्शनों का व्यापक पैमाने पर निर्माण प्रारम्भ कर दिया है। हृदय रोगियों को दिया जाने वाला Urokinase, जो महिलाएँ गर्भवती नहीं होती, उनके लिए दी जाने वाली Profasi तथा अन्य असाध्य रोगों के लिए उपयोगी Serocriptin Bromocriptine, Meprate, Ukidon, Pergonal (11MG), Metrodin HP Urofollitrophin (FHS) आदि अनेक दवाइयों के निर्माण में शिवाम्बु का प्रयोग होता है।

दुनियाँ में रोग मुक्त करने के लिए हजारों दवाइयाँ उपलब्ध हैं, जिनका रोगों की रोकथाम उपचार एवं परहेज के रूप में उनका सेवन किया जाता है। सभी दवाओं का शरीर के अंगों पर अपना अलग-अलग प्रभाव अथवा दुष्प्रभाव पड़ता है। आँख के रोगों की दवा कान में नहीं डाली जा सकती। नाक में डालने वाली दवा मुँह से नहीं ली जा सकती। परन्तु शिवाम्बु स्वयं के द्वारा स्वयं के शरीर से उनके रोगों की आवश्यकतानुसार निर्मित ऐसी दवा है, जिसका उपयोग चाहे कान हों या आँख, नाक हों या मुँह, त्वचा के रोग हो अथवा शरीर की आन्तरिक शुद्धि के लिए दिए जाने वाला एनिमा ही क्यों न हों, सभी में स्वस्थ रहने हेतु बेहिचक प्रयोग में लिया जा सकता है। अतः शिवाम्बु को अमरौली अथवा अमृत कहा जाए तो भी अतिशयोक्ति नहीं होती।

“ शिवाम्बु चिकित्सा में रोग के निदान की भी आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि शरीर में रोगों की आवश्यकतानुसार ही इसका निर्माण होता है। शिवाम्बु का समयक उपयोग अपने आप में चिकित्सा है तथा आधुनिक चिकित्सा में कार्य में ली जाने वाली अनेकों दवाइयों का एक मात्र प्रभावशाली विकल्प। ”

- डॉ. चंचलमल चोरडिया

चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर,

थार हैण्डलुम के सामने, गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)

(फोन) : 0291-2621454, 2632267 (घर), 2435471 (फैक्स), 094141-34606 (मोबाइल)

E-Mail : cmchordia.jodhpur@gmail.com

swachikitsa@therapist.net

(नोट :- परामर्श हेतु फोन पर सम्पर्क करें)